19TH October 2924

जनमत टुडे
उत्तर प्रदेश
देहरादून, शुक्रवार 18 अक्टूबर, 2024

चीनी गुणवत्ता व बीआईएस मानक पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा– सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस, चीनी, शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए प्रोफेसर परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 : प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025–26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है हालांकि हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा।

एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

सेमिनार के दौरान सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक–एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक पर चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने किया मंथन

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान,और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। प्रो.परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 ल प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा। सेमिनार के दौरान सुश्री सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। सुश्री दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से 18 अक्टूबर 2024 को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में 'भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा– सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। एस.के. त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं इस अवसर पर सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक–एफ, बीआईएस दिशा जंवर आरबी दानी आदि सभी लोग मौजूद रहे।

चीनी जांचने के मानक बदले जाएं

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और भारतीय मानक ब्यूरो की ओर से संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें 'भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक' विषय पर विशेषज्ञों ने राय रखी। कहा कि नई तकनीक की वजह से अब चीनी पहले के मुकाबले बेहतर है। इसलिए चीनी को मापने के मानक पर बदलाव करने की जरूरत है।

संगोष्ठी का उद्घाटन करतीं प्रो. सीमा परोहा और एसके त्रिवेदी। अमृत विचार

संगोष्ठी के दौरान बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संगोष्ठी की शुरुआत राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. डॉ. सीमा परोहा ने की। इस दौरान उन्होंने चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। संगोष्ठी में शर्करा प्रौद्योगिकी के सहायक आचार्य एसके त्रिवेदी ने कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं। चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई।

उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

सेमिनार के दौरान बीआईएस प्रमुख वैज्ञानिक एफ सुनीति टुटेजा ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक पर चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने किया मंथन

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान,और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। प्रो.परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 त्न प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा। सेमिनार के दौरान सुश्री सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। सुश्री दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

स्वतंत्र प्रभात
19 Oct 2024 - Page 5

रा. शर्करा संस्थान में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

● -अच्छी गुणवत्ता की चीनी के लिए चीनी उत्पादकों को प्रोत्साहित करने की जरुरत - डॉ सीमा परोहा

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से आज 18 अक्टूबर 24 को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में ÷भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक÷ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। प्रो.परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 त्न प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा। एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं। सेमिनार के दौरान सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी

के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई आयोजित

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में ꖸभारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानकꖸ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रोफ़ेसर (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस, चीनी, शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए प्रोफ़ेसर परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 त्न प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है हालांकि हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा।

एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं। सेमिनार के दौरान सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी दिशा ज़ंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

स्वराज इंडिया www.swarajindianews.com कानपुर सिटी कानपुर,शुक्रवार 18 अक्टूबर, 2024 02

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में हुआ राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस / चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए प्रो.परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 त्न प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा।

श्री एस.के. त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि

भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे

बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

Production of good quality sugar in cost-effective manner discussed

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

A one-day national seminar jointly organised by National Sugar Institute (NSI), Kanpur, and Bureau of Indian Standards (BIS) on "Indian Sugar Quality and BIS Standards" on Friday, was attended by a large number of delegates from various sugar producing states.

In her address Director, NSI, Dr Seema Paroha, emphasised on standardising the sugar standards and encouraged the industry for the production of good quality sugars. She presented various business models for producing ethanol from sugarcane-based raw materials viz C & B heavy molasses, sugarcane juice/sugar/ sugar syrup and also from rice, maize and through other feed stocks. "We have already achieved all-time high blending percentage of over 15.8 during the current ethanol supply year and expected to achieve 20 per cent in coming year (2025-26). However, we have to look for round the year operations of ethanol plants using multiple feed stocks as per availability and economics", she said.

A one-day national seminar jointly organised by National Sugar Institute , Kanpur, and Bureau of Indian Standards being inaugurated on Friday

Assistant Professor of Sugar Technology, SK Trivedi, in his address stressed the need for BIS standards for Indian sugar like raw sugar, Demerara sugar, natural golden light and dark brown sugar etc and also discussed production of good quality sugar in cost-effective manner for sustainability of sugar industry. He also discussed the evolving standards in sugar production and the significance of BIS regulations and how they help in maintaining consistency and trust across industries among the consumers. During it Scientist-F, head, BIS, Suneeti Toteja, made a presentation on national standardisation process in food and agriculture sector. Disha Zanwar expressed her views on Indian standards related to sugar industry. Dr Vashudha Keskar also shared views on sugar standards specification and their significance. Dr RV Dani, technical advisor, VSI Pune, discussed in detail about raw sugar for direct consumption purposes by changing their nomenclature and specifications as per BIS.

गुणवत्ता के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहन की आवश्यकता : प्रो.सीमा परोहा

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और भारतीय मानक ब्यूरो के संयुक्त तत्वाधान में शुक्रवार को शर्करा संस्थान में चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो.सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस,चीनी,शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए।

प्रो.परोहा ने कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 प्रतिशत प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा वैज्ञानिक-एफ बीआईएस प्रमुख सुनीति टुटेजा ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। दिशा ज़ंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

DT दीनार टाइम्स

चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी पर फोकस करें

डीटीएनएन,कानपुर।
भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस,चीनी,शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए।

प्रो.परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 त्र प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालांकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा।

एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

सेमिनार के दौरान सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। दिशा ज़ंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर. वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

विशाल सैनी ब्यूरो चीफ कानपुर

कानपुर-राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस, चीनी, शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए प्रोफेसर परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 % प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है हालांकि हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा

एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं। सेमिनार के दौरान सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानकः विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

भोर वैभव । दीपक गौड़

कानपुर । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में "भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस, चीनी, शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए प्रोफेसर परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 % प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है हालांकि हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा.

एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

सेमिनार के दौरान सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

(उत्तर प्रदेश) एनएसआई स्थापना दिवस

एथेनॉल उत्पादन के और विकल्प तलाशें वैज्ञानिक

एनएसआई (राष्ट्रीय शर्करा संस्थान) के 89वें स्थापना दिवस के अवसर पर राज्यमंत्री उपभोक्ता मामले खाद्य और सार्वजनिक वितरण, निमुबेन जयंतीभाई बांभणिया ने कहा कि एथेनॉल उत्पादन और जैव ईंधन की मदद से भारत को स्वच्छ और हरित ऊर्जा का विकल्प दिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि एथेनॉल उत्पादन के कई और विकल्प तलाशने होंगे। संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में राज्यमंत्री ने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिक बेहतर काम कर रहे हैं, जिसका लाभ चीनी मिल और शुगर इंडस्ट्री को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि एनएसआई अपनी स्थापना के समय से ही शुगर टेक्नालॉजी और सम्बंधित क्षेत्र में शोध कर रहा है। संस्थान इस क्षेत्र में नवाचार, प्रशिक्षण और विकास का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है।

संस्थान की निदेशक डॉ. सीमा परोहा ने कहा कि बायो फ्यूल को लेकर आईआईटी के साथ मिलकर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना की गई है जो पर्यावरण के लिए बड़ा बदलाव साबित होगा। डॉ. परोहा ने बताया कि संस्थान 12 देशों के साथ परामर्श और प्रशिक्षण के लिए समझौता किया है। समारोह का उद्देश्य उन प्रमुख किसानों, चीनी और अल्कोहल उद्योग के विशेषज्ञों और हितधारकों को सम्मानित करना है जिन्होंने इस उद्योग के विकास और आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संस्थान ने 12 पुरा छात्रों को दिया शर्करा श्री सम्मान

शर्करा निदेशक संगीत जी ने कहा कि इस अवसर पर शर्करा श्री पुरस्कार प्राप्त करने वाले उद्यमी इस बात का प्रमाण हैं कि संस्थान के पुरा छात्र अपने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करके संस्थान का नाम रोशन कर रहे हैं। जैव ईंधन और एथेनॉल से सम्बन्धित क्षेत्र में एनएसआई द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है। संस्थान ने इस अवसर पर 12 पुरा छात्रों जो इस उद्योग जगत की बड़ी हस्तियां हैं, उन्हें शर्करा श्री सम्मान से सम्मानित किया है। डॉ. राकेश भटनागर, डॉ. ममता (भाटिया) तोमर, के.पी. सिंह, जे.पी. त्रिपाठी, मुकेश चौहान, संजय कुमार चौधरी, संदीप अग्रवाल, डॉ. आशुतोष बाजपेयी, एन. प्रभाकर, आमोद कुमार शर्मा, प्रदीप खंडेलवाल और अरविंद कुमार दीक्षित को शर्करा श्री दिया गया है।

कार्यक्रम में शुगर इंडस्ट्री से जुड़ी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। चीफ डिजाइनर अखिलेश कुमार पाण्डेय ने बताया कि इस मौके पर शैलेंद्र कुमार द्विवेदी, अशोक कुमार गर्ग, डॉ. अशोक कुमार, संजय चौहान, अनूप कनौजिया, डॉ. विनय कुमार आदि मौजूद रहे। संचालन मल्लिका द्विवेदी ने किया। ओल्ड ब्वायज एसोशिएशन के सचिव एस.के. त्रिवेदी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

एनएसआई में बनेगा टिश्यू कल्चर लैब

कानपुर स्थित राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में 4 अक्टूबर को संस्थान के 89वें स्थापना दिवस पर पहुंची केंद्रीय राज्य मंत्री (उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय) निमुबेन जयंतीभाई बांभणिया ने ढाई करोड़

रुपये की लागत से तैयार होने वाली टिश्यू कल्चर लैब का शिलान्यास किया। संस्थान के विशेषज्ञों का कहना है कि इस लैब की मदद से अब गन्ने की फसल को तैयार करना बहुत आसान हो जाएगा। लैब द्वारा बंपर बीज उत्पादन की दिशा मे अब प्रयास किया जायेगा। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के विशेषज्ञों ने कहा कि गन्ने की जो नोबल प्रजाति दुनिया भर में जानी जाती रही है, वह 238 वैरायटी है। 2014 से यह वैरायटी उप्र, पंजाब, हरियाणा समेत अन्य राज्यों से धीरे-धीरे विलुप्त सी हो रही है। इसका एक बड़ा कारण है, इस वैरायटी में लाल सड़न रोग का लगना। विशेषज्ञों ने कहा कि अब हमें इस वैरायटी के स्थान पर अन्य वैरायटी को तैयार करना है। जिससे अधिक से अधिक किसानों को लाभ मिल सके।

उत्तम मिल के डिस्टिलरी उपाध्यक्ष हुए सम्मानित

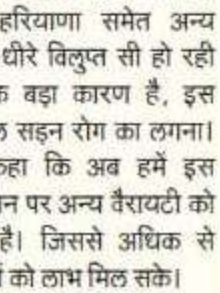

एथेनॉल उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करने पर उत्तम शुगर मिल बरकतपुर के डिस्टिलरी उपाध्यक्ष जेपी त्रिपाठी को भारत सरकार द्वारा 'शर्करा श्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। भारत सरकार के साथ फरवरी माह में हुए 100 करोड़ के एमओयू को जेपी त्रिपाठी के नेतृत्व में 11 माह में ही क्षमता विस्तारीकरण कर पूरा कर लिया गया। एथेनॉल उत्पादन, दुर्घटना रहित उद्योग संचालन, प्रदूषण रहित मानकों के अनुरूप कार्य करने एवं क्षमता को पूर्ण उपयोग करने हेतु 4 अक्टूबर को कानपुर के राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में भारत सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के राज्य मंत्री नीमूबेन बंभानिया द्वारा जेपी त्रिपाठी को सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

आज का कानपुर

कानपुर । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रोफ़ेसर (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस, चीनी, शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए प्रोफ़ेसर परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 % प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है हालांकि हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा

एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

सेमिनार के दौरान सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी दिशा जंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

चेतना समाचार सेवा

कानपुर। आज राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों

के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस,चीनी,शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 % प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष 2025-26 में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा। एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

सत्य का असर समाचार पत्र

19,10, 2024jksingh,hardoi agmail com
मोबाइल नंबर 9956834016

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 % प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा : निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान "भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। प्रो.परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 % प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा।श्री एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं। सेमिनार के दौरान सुश्री सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। सुश्री दिशा ज़ंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। बीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

भारतीय चीनी गुणवत्ता व बीआईएस मानक पर हुई चर्चा

अतिथि को पुस्तक भेंट करतीं निदेशक प्रो. सीमा परोहा।

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 18 अक्टूबर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से आज भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करतीं हुई एनएसआई की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने कहाकि चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। प्रो.परोहा ने कहाकि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 त प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करे का लक्ष्या है। एस.के.त्रिवेदी ने कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। इस दौरान सुनीति टुटेजा, दिशा जंवर, डॉ. वसुधा केसकर, वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी आदि मौजूद रही।

शनिवार 19 अक्टूबर
2024,नई दिल्ली

समाचार

नेशनल सेमिनार,भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक

निस्पक्ष पोस्ट/डॉ. कृष्ण मोहन त्रिपाठी

कानपुर /राष्ट्रीय शर्करा संस्थान डायरेक्टर प्रो. (डॉ.) सीमा मिश्रा परोहा तथा सुश्री सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड ने संयुक्त रूप से की राष्ट्रीय संगोष्ठी।पत्रकार द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में सुश्री सुनीति टुटेजा ने बताया की ब्यूरो ऑफ़ इंडियन स्टैंडर्ड ने मानकों को दो कैटेगरी में डिवाइड किया है पहले अगर कोई इंडस्ट्रियलिस्ट जनरल अप्लाई करता है मार्क के लिए। उसका समय 30 दिन का होता है इस कैटेगरी में अप्लाई करने वालों की संख्या ज्यादा होती है इसके अलावा दूसरी कैटेगरी में कुछ विशेष प्रोडक्ट होते हैं जिनके लिए समय 90 दिन निर्धारित किया गया है क्योंकि कभी-कभी लैब टेस्टिंग में ही 30 दिन का समय लग जाता है। उन्होंने एन एस आई की डायरेक्टर तथा शुगर के विशेषज्ञों को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने लिया भाग ।राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा मिश्रा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को स्टैंडर्ड करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर दिया बल। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल पर की चर्चा। उन्होंने सुश्री सुनीति टुटेजा तथा स्पीकर को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया खास तौर से रॉ मैटेरियल और गुणवत्ता से भरी टेस्टी शुगर के लिए मिली गाइडलाइन पर काम करने का वादा किया/प्रो.परोहा ने बताया वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 % प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा। श्री एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।सेमिनार के दौरान सुश्री सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। सुश्री दिशा ज़ंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की। धन्यवाद अशोक गर्ग जी ने दिया।

नेकी की दीवार ने सामुदायिक सहयोग के साथ मनाया तारा चन्द घिल्डियाल का जन्मदिन

अल अ
सर स

निष्पक्ष पोस्ट
सम्भल। उ.प्र।
अवसर पर वि
सोसाइटी प्रदेश
कि सर सय्यद
तक सीमित नहीं
संस्थानों की स्थ
हुजैफा यासिर ने
से एक, सर स
1817 को दिल्ल
सेवक के रूप में
उर रहमान बरक
प्रथम मुस्लिम

शिक्षा
चक्र वी

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के तत्वाधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया

दैनिक तस्वीर आजकल

कानपुर । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल यथा- सी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस/ चीनी/शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फ़ीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। प्रो.परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 त्र प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालाँकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग करके इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा। एस.के.त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के लिए बीआईएस मानक हैं और चीनी उद्योग की स्थिरता के लिये, लागत प्रभावी तरीके से अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की गई। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं। सेमिनार के दौरान सुश्री सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। सुश्री दिशा कुंवर ने चीनी उद्योग से संबंधित भारतीय मानकों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. वसुधा केसकर ने चीनी मानक विनिर्देश और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.वी. दानी ने बीआईएस के अनुसार नामकरण और विशिष्टताओं को बदलकर कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के प्रयोजनों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

कृष्णा इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के छात्रों द्वारा विश्व प्रसिद्द कंपनी अमूल संयंत्र के परिसर में औद्योगिक भ्रमण का आयोजन किया गया

दैनिक तस्वीर आजकल

कानपुर। सस्था कृष्णा इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेकनोलॉजी के द्वारा इंजीनियरिंग और एमबीए पाठ्यक्रमों में छात्र छात्राओं हेतु विश्व प्रसिद्द कंपनी अमूल संयंत्र के परिसर में औद्योगिक भ्रमण का आयोजन किया गया। यह इंजीनियरिंग और एमबीए पाठ्यक्रमों में एक मानक प्रक्रिया है। यह छात्रों के लिए भारत के सबसे प्रसिद्ध डेयरी उद्योगों में से एक का दौरा करने और उत्पादन लाइन के बारे में जानकारी हासिल करने का एक शानदार अवसर था। डॉ वर्गीस कुरियन के नेतृत्व में अमूल की समृद्ध विरासत से शुरू करते हुए प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला अमूल की उत्पत्ति और इसके विकास की झलकियाँ सचित्र रूप में दिखाता है और सहकारिता और सहकारी संगठनों के सिद्धांत में विश्वास जगाता है। अमूल की टीम के साथ एक संवादात्मक सत्र हुआ। अमूल का पूरा नाम आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड है, अमूल का स्वामित्व गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन महासंघ के पास है। गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन महासंघ गुजरात में स्थित भारत का नसबसे बड़ा खाद्य उत्पाद विपणन संगठन है। यह गुजरात की डेयरी सहकारी समितियों का शीर्ष विपणन निकाय है जिसे विकास में उत्कृष्टता के मानक के रूप में मानयता प्राप्त है। इसकी स्थापना 1946 में की गई थी यह गुजरात कोऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड द्वारा प्रवचित एक सहकारी ब्रांड है छात्र औद्योगिक दौरे के माध्यम से किसी संगटन के आआंतरिक कामकाज को समझते है। जिसमें छात्रों के अमूल के बारे में प्रश्नों के उत्तर देने में मदद मिली। प्रत्येक औद्योगिक दौरा छात्रों को कक्षाओं में सीखी गई सभी प्रबंधन अवधारणाओं को व्यावहारिक रूप में लागू करने के लिए एक आदर्श मंच प्रदान करता औद्योगिक भ्रमण को शिक्षण के सबसे सामरिक तरीकों में से एक माना जाता है। यह छात्रों को बातचीत, काम करने के तरीकों और रोजगार प्रथाओं के माध्यम से व्यावहारिक रूप से सीखने का अवसर प्रदान करता है। यह शैक्षणिक दृष्टिकोण से एक्सपोजर देता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अमूल में 15 लाख लोगों को रोजगार मिल रहा है। प्रोडक्शन, प्लाट वर्कर, ट्रांसपोर्ट, मार्केटिंग, डिस्ट्रीब्यूशन और सेल्स में अमूल बसे स्तर पर रोजगार क्रिएट कर रहा है। अमूल से 35 लाख से अधिक किसान जुड़े हैं। कंपनी के पास 87 प्लांट है, जो डेयरी प्रोडक्ट, मिठाई आदि तैयार करती

है। सस्थान का लक्ष्य एक ऐसा शिक्षण हसक्षेप बनाना है जो व्यावहारिक, हाथों-हाथ कौशल वृद्धि ज्ञान से जुड़ा हो ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों का शिक्षण केवल सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर केंद्रित न हो। इस तरह का प्रशिक्षण छात्रों को नौकरी पर अधिक अवलोकन और वर्तमान रुझानों, उनके सीखने के अनुप्रयोगों और अन्य लाभों के बारे में जानकारी प्रदान करता है पैकेजिंग, वितरण और विपणन रणनीतियों अमूल के प्रतिष्ठित विज्ञापन अभियानों को रेखांकित करने वाले अभिन्न अंग थे। सहकारी मॉडल के महत्व पर जोर दिया गया, जिससे किसानों के जीवन पर इसके सकारात्मक प्रभाव का पता चला। इस यात्रा के लाभों में भारत के डेयरी उद्योग में शैक्षिक अंतर्दृष्टि व्यावहारिक शिक्षा गुणवत्ता नियंत्रण उपायों से परिचित होना और प्रौद्योगिकी की भूमिका की समझ शामिल थी। छात्रों ने उत्पाद विविधीकरण, विपणन रणनीतियों, सहकारी मॉडल और स्थानीय सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का पता लगाया। इस यात्रा ने एक नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म, संभावित कैरियर अंतर्दृष्टि: और स्वेत क्राति में अमूल के योगदान की एक प्रेरणादायक कहानी प्रदान की। उद्योग विशिष्ट ज्ञान से परे, उपस्थित लोगों ने भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका के लिए प्रशंसा विकसित की सांस्कृतिक विसर्जन का अनुमत किया। विशेषज्ञों, तकनीशियनों और उद्योग सहयोगियों के साथ बातचीत छात्रों को पारस्परिक कौशल विकसित करने, उनके व्यक्तित्व को ऊपर उठने और उनके पेशेवर व्यवहार को तैयार करने में मदद करती है। संस्था के निदेशक प्रशासन सौभाग्य मेहरोत्रा संस्था की निदेशक डॉ रश्मि द्विवेदी और डीन प्लेसमेंट कात्यायनी शुक्ला ने छात्र छात्रों का मार्गदर्शन किया और निकट भविष्य में अन्य बहुराष्ट्रीय कंपनी में औद्योगिक भ्रमण का आयोजन करवाने का कार्यक्रम आयोजित किये जाने पर बल दिया जिससे छात्र अपना सर्वांगीण विकास कर सके । इस भ्रमण में संस्थान के शिक्षक भास्कर पवार, सत्येंद्र अग्निहोत्री, योगेंद्र पांडेय, औ0 नमिता श्रीवास्तव मृदुला यादव अदि उपस्थित रहे।

महिला आयोग की सदस्य 22 अक्टूबर को जनपद में सुनेगी समस्यायें

तस्वीर आजकल ब्यूरो

कानपुर देहात। उ.प्र. राज्य महिला आयोग द्वारा प्रदेश में महिला उत्पीड़न की रोकथाम एवं पीड़ित महिलाओं को त्वरित न्याय दिलाए जाने तथा आवेदक दृष्टि से प्रदेश के विभिन्न जनपदों के राजकीय गेस्ट हाउसों में सम्बन्धित जनपद के जिलाधिकारी की ओर से नामित वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अथवा पुलिस अधिकारी, महिला थानाध्यक्ष एवं सम्बन्धित थाने के क्षेत्राधिकारी के साथ जनपद में महिला उत्पीड़न की घटनाओं की समीक्षा, महिला जनसुनवाई, निरीक्षण का कार्यक्रम चलाया जा को प्रात: 11:00 बजे सर्किट हाउस माती में श्रीमती अनीता गुप्ता सदस्य राज्य महिला आयोग की अध्यक्षता में जनसुनवाई की जायेगी तथा तत्पश्चात महिला बन्दी गृह, बालिका, महिला गृह का निरीक्षण

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में 'भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

सुशील त्रिवेदी

कानपुर नगर,अमन यात्रा। कानपुर के राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। यह संगोष्ठी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई, जिसमें कई चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी के दौरान राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉ.) सीमा परोहा ने चीनी उद्योग में मानकीकरण और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने इथेनॉल उत्पादन के विभिन्न बिजनेस मॉडलों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें गन्ने से लेकर चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक्स के उपयोग की संभावना पर चर्चा की गई। उन्होंने उल्लेख किया कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष में 15.8% का उच्चतम ब्लेंडिंग प्रतिशत प्राप्त किया गया है, और अगले वर्ष (2025-26) तक इसे 20% तक पहुंचाने की योजना है। एस.के. त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी, ने भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी के लिए बीआईएस मानकों पर चर्चा की। उन्होंने चीनी उद्योग की स्थिरता और उपभोक्ता विश्वास बनाए रखने में बीआईएस नियमों के महत्व पर बल दिया। सुश्री सुनीति टुटेजा, वैज्ञानिक-एफ, बीआईएस प्रमुख, ने खाद्य और कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया पर प्रस्तुति दी। सुश्री दिशा जैन और डॉ. अनुपमा केसकर ने चीनी उद्योग से जुड़े मानकों और उनके महत्व पर अपने विचार साझा किए। वहीं, वीएसआई पुणे के तकनीकी सलाहकार प्रोफेसर डॉ. आर.बी. डाने ने बीआईएस के अनुसार कच्ची चीनी के सीधे उपभोग के लिए नामकरण और विशिष्टताओं में बदलाव पर विस्तार से चर्चा की। इस संगोष्ठी का उद्देश्य भारतीय चीनी उद्योग की गुणवत्ता और स्थिरता को बढ़ावा देना था, जिसमें बीआईएस मानकों के तहत चीनी उत्पादन के नियमों को लागू करने पर विशेष ध्यान दिया गया।

चीनी की अच्छी गुणवत्ता पर हुई चर्चा

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान व भारतीय मानक ब्यूरो के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में 'भारतीय चीनी गुणवत्ता और बीआईएस मानक' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक प्रो. डॉ. सीमा परोहा ने अपने संबोधन में चीनी मानकों को मानकीकृत करने और अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। उन्होंने गन्ना आधारित कच्चे माल जैसेसी एंड बी हैवी मोलासेस, गन्ने का रस, चीनी, शुगर सिरप, चावल, मक्का और अन्य फीड स्टॉक के माध्यम से भी इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए। प्रो. परोहा ने आगे कहा कि वर्तमान इथेनॉल आपूर्ति वर्ष के दौरान हमने पहले ही अब तक का सबसे अधिक ब्लेंडिंग प्रतिशत 15.8 प्राप्त कर लिया है और आने वाले वर्ष (2025-26) में 20.00 प्रतिशत ब्लेंडिंग प्राप्त करने की आशा है। हालांकि, हमें उपलब्धता और अर्थव्यवस्था के अनुसार मल्टिपल फीड स्टॉक का उपयोग कर इथेनॉल संयंत्रों के पूरे वर्ष संचालन पर ध्यान देना होगा। इस मौके पर एसके त्रिवेदी सहायक आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी ने अपने संबोधन में भारतीय चीनी जैसे कच्ची चीनी, डेमेरारा चीनी, हल्की सुनहरी और गहरे भूरे रंग की चीनी आदि के अच्छी गुणवत्ता वाली चीनी के उत्पादन पर भी चर्चा की। उन्होंने चीनी उत्पादन में विकसित मानकों और बीआईएस नियमों के महत्व पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे बीआईएस नियम उपभोक्ताओं के बीच उद्योगों में स्थिरता और विश्वास बनाए रखने में मदद करते हैं।

Digital News

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में हुआ राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन
- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर और भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संयुक्त रूप से सेमिनार का आयोजन।
- NSI Kanpur Hosts National Seminar on Indian Sugar Quality and BIS Standards - Sugar Times
- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में चीनी गुणवत्ता को लेकर कार्यक्रम आयोजन
- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में क्वालिटी और प्रोडक्शन पर एक दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया।
- Report, National seminar(National sugar institute kanpur & bureau of Indian standard) conducted